International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मानव धर्मशास्त्र का महत्त्व

डॉ. इतिश्री महापात्र
संविदाध्यापिका, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
एकलव्यपरिसर,त्रिपुरा
Email -itishreeambika@gmail.com

शोधसार -

मनुस्मृति हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे धर्म, कर्म और संस्कारों पर शिक्षा देती है। यह एक आधारभूत धर्मशास्त्र है जो नियमों और नैतिक दिशानिर्देशों का वर्णन करता है। यह ग्रंथ भारतीय समाज की संरचना, जिसमें जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था शामिल हैं, की गहरी समझ प्रदान करता है। इसके माध्यम से प्राचीन भारतीय समाज और संस्कृति के ताने-बाने को समझा जा सकता है। मनु प्रणित मानव धर्मशास्त्र अर्थात् मनुस्मृति में कुल द्वादश अध्याय है। इनमें से प्रथम अध्याय में महर्षि मनु के द्वारा समग्र मनुस्मृति ग्रंथ का सार रचा गया है। अतः "मानव धर्मशास्त्र का महत्व" शीर्षक इस लेख में प्रथम अध्याय के श्लोकों के माध्यम से इस संपूर्ण मनुस्मृति का सार प्रस्तुत हैं।

भूमिका-

भारतीय धर्म के प्रधान पीठ ये वेद ही हैं। ये अत्यन्त समादरणीय है। वेदों का अक्षर- अक्षर पवित्र माना जाता है। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन -परिवर्द्धन क्षम्य नहीं है। भारतीय ऋषि-मुनियों के प्रातिभ अनुभूतियों के परिप्रेक्ष्य में वैदिकवाङ्मय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस वाङ्मय में आधुनिक विज्ञान से भी उदात्ततर वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन है। समस्त भारतीय वाङ्मय में व्याप्त चतुर्दशविद्याओं में धर्मशास्त्र अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।इस विषय में कहीं भी सन्देह नहीं है। समस्त भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के निर्धारण में श्रुति अर्थात् वेद एवं स्मृति अर्थात् धर्मशास्त्र का बडा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मनुष्य के किसी कर्म में प्रवर्तन का अथवा किसी कर्म से निवर्तन का उपदेश करने वाले नित्य अपौरूषेय ग्रन्थ वेद अथवा वेदमूलक पौरूषेय ग्रन्थ स्मृतिशास्त्र कहे जाते है [1]। अथवा मनुष्य के ऐकान्तिक हित का उपदेश करने वाला ग्रन्थ भी शास्त्र कहा जाता है[2]। भारतवर्षीय मूल परम्परा में अपौरूषेय ग्रन्थ अर्थात् अज्ञान, अहङ्कार, राग, द्वेष,काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,मात्सर्य,भय,भ्रम,प्रमाद, आलस्य,विप्रलिप्सा इत्यादि पुरूषदोष के संसर्ग से रहित ग्रन्थ होने से वेद ही मुख्य रूप में शास्त्र माने जाते है। वेद में विहित अथवा उक्त अथवा सूचित अथवा आकाङ्क्षित अथवा वेद के अनूकुल अथवा अविरोधी अर्थ के प्रतिपादक वेदानुगामी स्मृति-पुराणकों भी शास्त्र माने जाते हैं। शास्त्र लोक में अत्यन्त बलवान् राजा महाराजाओं को तथा अत्यन्त धनवान् लोगों को भी सन्मार्ग में चलने के लिए प्रेरणा देने वाला और उनमें भी नैतिक दबाव डालने वाला तत्व हैं। यह एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ **आज्ञा नियम या उपदेश** है। अत एव शास्त्र का महत्त्व सर्वविदित हैं। जो हमारे जीवन को सही दिशा देती है। शास्त्र उन ग्रन्थों को कहते हैं । शास्त्र कहते है कि मनुष्य के मन में असीमित ऊर्जा,शक्ति और सामर्थ्य है। जव अपने विचार ,भाव,संकल्प,सामर्थ्य,ऊर्जा और शक्ति का सही इस्तेमाल करते है तो बडे से बडे कार्य भी सिद्ध हो जाता है।

[1] . प्रवृत्तिर् वा निवृत्तिर् वा नित्येन कृतकेन वा। पुंसा येनोपदिश्यते तच् छास्त्रमभिधीयते ॥
[2] . शास्त्रत्वं हितशासनात्। भामती,ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या 1-1-4

भारतवर्ष धर्मप्राण देश है। अतः यहां 'धर्म' विशेष ध्यान दिया गया है , यथा मनु -

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः[3]।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत ।।

धर्म ही एक एसा जीवंत तत्त्व है जिसके आधार पर मनुष्य और पशु की परख होता है, '**धर्मेण हीना पशुभिः समानाः**' 'धर्म' शब्द संस्कृत "धृञ्" धातु से बना है , जिसका अर्थ है - धारण करना , पालन करना ,आलम्बन देना। ऋग्वेद में यह धार्मिकविधियों तथा धार्मिक क्रिया संस्कारों में प्रयुक्त हुआ हैं। छान्दोग्योपनिषद में धर्मशब्द व्यापक संदर्भ प्रस्तुत करता है। बहाँ यह धर्मशब्द गृहस्थ धर्म, तापसधर्म और ब्रह्मचारी के धर्म की और संकेत दे रहा है। अन्ततोगत्वा यह मानव के कर्तव्यों, आर्यजाति की आचार-विधियों का निदेशक बनता है। तैत्तिरीयोपनिषद् का वाक्य विशेषतः विद्यार्थियों को आचारधर्म का पावन उपदेश दे रहा है, जैसे सत्यं वद, धर्मं चर [4]। गीता में यह धर्म-सन्देश इस रूप में व्यक्त हुआ है, जैसे- स्वधर्मे निधनं श्रेयः[5]। धर्मशास्त्रो में धर्मशब्द इसी का आनुपूर्वी रूप है। मनुस्मृति में मनु से मुनि लोग धर्मसम्बन्धी व्याख्या करने की प्रार्थना करते है, जो सब वर्णो-जातियों की शिक्षा के लिए उपादेय है – [6]

भगवन् सर्ववर्णनां यथावदनुपूर्वशः ।
अन्तरप्रभावाणां च धर्मान्नो वक्तुमुर्हसि ।।

अब प्रश्न यह है कि कौन सा कार्य धार्मिक माना जाय और कौनसा कार्य आधार्मिक। इसका उत्तर मनुस्मृति में यह है कि वेद तथा स्मृति प्रतिपादित सज्जनों का आचार तथा मन की प्रसन्नता जिस कर्म में हो वहो धर्म है , शेष को अधर्म कोटि में जानना चाहिए - [7]

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशिले च तद्विदाम् ।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ।।

महर्षि वेदव्यासजी ने धर्म शब्द की व्याख्या में अत्यन्त सुबोध एवं सर्वसम्मत उत्तर प्रस्तुत किया है। यथा – **परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्**। यहाँ धर्म शब्द एकदम बदल गया, वह 'पुण्य' का वाचक हो गया है अर्थात् जो इस तरह का कार्य करेगा वह पुण्यत्मा, और जो फलाना कार्य करेगा वह पापात्मा हुआ।

धर्मशब्द से साधारण लोग पूजा-पाठ को ही समझते हैं। किन्तु भारतवर्षीयपरम्परा में धर्मशब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। धर्म के प्रथमतः दो भेद है , लोकधर्म और शास्त्रधर्म। लोकधर्म कहने से साधारण मनुष्य तत्त्वदर्शन के विचार के विना ही त्रास से अथवा आशा से अज्ञात अदृश्य अस्पष्ट सम्भावित नियन्ता को प्रसन्न बनाकर उन से त्राण अथवा अन्य वाञ्छित वस्तु पाने के लिए उन की पूजा- आराधना जो करते हैं उस को लिया जाता है। शास्त्रधर्म वह है जो निश्चित तत्त्वदर्शन के आधार में लोकव्यवस्थापन भी करते हुए सोपानक्रम से मोक्ष तक पहुंचाने वाला क्रियाकलाप है। शास्त्रधर्म के सोपानों में मुख्य रूप में राष्ट्रनियामक धर्म, समाजनियामक धर्म, कुटुम्बनियामक धर्म, शरीरनियामक धर्म, इन्द्रियनियामक धर्म, मनोनियामक धर्म, आत्मदर्शनप्रयोजक धर्म आता है। धर्म के उक्त सभी पक्षो को दृष्टिगत करके ऋषिमुनियों ने धर्म के लक्षण बताए हैं।

यतोऽभ्युदयनिश्श्रेयससिद्धिः स धर्मः[8]
चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः ।[9]

[3] . म.स्मृ – 8-15
[4] . तै. 1-11
[5] . गीता-3-35
[6] . म.स्मृ-1-2
[7] . मनु.2-6
[8] वैशेषिकसूत्र 1-1-2
[9] जैमिनीय – धर्ममीमांसासूत्र 1-1-2

श्रुति-स्मृतिविहितो धर्मः,तदलाभे शिष्टाचारः प्रमाणम् ।[10]
वेदोक्तः परमो धर्मः स्मृतिशास्त्रगतोऽपरः ।
शिष्टाचारोऽपरः प्रोक्तस् त्रयो धर्माः सनातनाः ।।[11]
श्रुतिस्मृतिभ्यां कथितं यत् स धर्मः प्रकीर्तितः ।
अन्यशास्त्रेण यः प्रोक्तो धर्माभासः स उच्यते ।।[12]
श्रुति-स्मृति उभे नेत्रे पुराणं हृदयं स्मृतम् ।
एतत् – त्रयोक्त एव स्याद् धर्मो नाऽन्यत्र कुत्रचित् ।।[13]
वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस् तद्विपर्ययः ।
वेदो नारायणः साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुमः ।।[14]
श्रुतिस्मृतिपुराणेषु प्रोक्तो धर्मः सनातनः ।
वर्णाश्रमस्वरूपेण निषेव्यः सर्वदा जनैः ।।[15]
वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृति-शीले च तद्विदाम् ।
आचारश् चैव साधूनामात्मनस् तुष्टिरेव च ।।[16]
विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर् नित्यमद्वेषरागिभिः ।
हृदयेनाऽभ्यनुज्ञातो यो धर्मस् तं निबोधत ।।[17]

मनुस्मृति के व्याख्याकार मेघातिथि के अनुसार धर्मशब्द के पाँच उपादान प्राप्त होते हैं जो इस प्रकार हैं – 1. वर्णधर्म 2.आश्रमधर्म3.वर्णाश्रमधर्म,4. नैमित्तिकधर्म,5.गुणधर्म प्रस्तुत मनुस्मृति में धर्मशब्द इसी का पोषक है । इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था तथा राजधर्म-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करनेवाला मनुस्मृति ग्रन्थ प्रमुख है । स्मृतिकारों मे से मनु का व्यक्तित्व महान् है । ऋग्वेद के अनुसार मनु मानव जाति के आदि पिता है । ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों की परम्परा में आते हैं । मनु से पैदा होने के नाते हम मानव कहलाते हैं । **'मानव्यो हि प्रजा'** । तैत्तरीय संहिता एवं ताण्ड्य-महाब्राह्मण के अनुसार मनु ने जो कुछ कहा है वह औषध है –

[18]यद् वै किंच मनुरवदत् तद् भेषजम् ।
[19]मनु वैं यत् किञ्चावदत् तत् भैषज्यायै ।

महाभारत शान्ति पर्व में मनु को मनु, स्वायम्भुव मनु तथा प्राचेतस मनु कहा गया है । शान्ति पर्व की कथा इस प्रकार है – ब्रह्मा जी ने मानव कल्याणार्थं धर्म,अर्थ तथा काम पर एक लक्ष्यात्मक महाकाय ग्रन्थ रचा था जो कभी काल में इन्द्र, बाहुदन्तक, बृहस्पति और उशना द्वारा संक्षिप्त कर दिया गया । नारद स्मृति के अनुसार मनु ने एक धर्मशास्त्र लिखा था और उसे नारद को पढाया । नारदजी ने मार्कण्डेय ऋषि को, मार्कण्डेय जी ने संक्षेप करके सुमति भार्गव को पढाया, फिर भार्गव ने इसका और छोटा संस्करण चार हजार श्लोकों में बना दिया, जो मानवधर्मसूत्र या मानवधर्मशास्त्र का अति संशोधित रूप संभवतः आज कल का यह **'मनुस्मृति'** ग्रन्थ है ।

[10] वसिष्ठधर्मसूत्र 1-4,5
[11] म.भा अनुशासन.141-65
[12] देवीभागवत 7-39-15
[13] देवीभागवत 11-1-21
[14] भागवत 6-1-40
[15] स्कन्द.पु. ब्राह्मखण्ड 3-11-17
[16] मनु.स्मृ 2-6
[17] मनु.स्मृ 2-1
[18] तै.सं.2-2-10-2
[19] ता.23-16-17

सम्पूर्ण मनुस्मृति द्वादश अध्यायों में विभाजित है। इसमें धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का प्रतिपादन है। इसकी भाषा सरल सुबोध धाराप्रवाह शैली में है। इनमें से प्रथम अध्यायमें- संसारोत्पत्तिका, द्वितीय अध्यायमें-जातकर्मादि संस्कारविधिका, ब्रह्मचर्य व्रतविधि और गुरूके अभिवादनविधिका, तृतीय अध्यायमें- ब्रह्मचर्य व्रतकी समाप्तिके बाद समावर्तनका,पञ्चमहायज्ञ और नित्य श्राद्ध विधिका, चतुर्थ अध्यायमें – ऋत-प्रमृत आदि जीविकाओं के लक्षण तथा स्नातक(गृहस्थ) के नियमकका, पञ्चम अध्यायमें- दूध-दही आदि भक्ष्य तथा प्याज लहसुन आदि अभक्ष्य पदार्थों और दशाहादिके द्वारा जनन-मरणशौचमें ब्राह्मणादि द्विजातियोंकी तथा मिट्टी, पानी आदि के द्वारा द्रव्य एवं वर्तनों की शुद्धिका और स्त्रीधर्मका षष्ठ अध्यायमें – वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रमका, सप्तम अध्यायमें व्यवहार (मुकदमों) के निर्णय तथा करग्रहण आदि राजधर्मका,अष्टम अध्यायमें-साक्षियोंसे प्रश्नविधिका, नवम अध्यायमें साथ तथा पृथक् रहने पर स्त्री तथा पुरूषके धर्म, धन आदि सम्पत्तिका विभाजन, द्यूत-विधि, चौरादि निवारण तथा वैश्य एवं शूद्रके अपने-अपने धर्मके अनुष्ठानका, दशम अध्यायमें-अम्बष्ठ आदि अनुलोमज तथा मृत – मागध-वैदेह- आदि प्रतिलोमज जातियोंकी उत्पत्ति और आपत्तिकालमें कर्त्तव्य धर्मका,एकादश अध्यायमें पापकी निवृत्तिके लिए कृच्छ्र-सन्तापन-चान्द्रायणादि प्रायश्चित्त विधिका और अन्तिम द्वादश अध्यायमें – कर्मानुसार तीन प्रकार की (उत्तम, मध्यम तथा अधम) सांसारिक गतियों, मोक्षप्रद आत्मज्ञान,विहित एवं निषिद्ध गुण-दोषों की परीक्षा, देशधर्म, जातिधर्म तथा पाखण्डिधर्मका वर्णन किया गया है।[20]

जगतश्च समुत्पत्तिं संस्कारविधिमेव च।
व्रतचर्योपचारं च स्नानस्य च परं विधिम्।

संसारकी उत्पत्ति, संस्कारविधि, ब्रह्मचर्य आदि व्रतका आचरण और गुरूका अभिवादन सेवन आदि उपचार, ब्रह्मचर्य व्रतको समाप्त कर गुरूकुल से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेके पूर्व स्नानरूपं संस्कार विशेषका श्रेष्ठ विधान।[21]

दाराधिगमनं चैव विवाहानां च लक्षणम्।
महायज्ञविधानं च श्राद्धकल्पं च शाश्वतम्॥

पत्नी की प्राप्ति को विवाह प्रकारों के लक्षणों को, ब्रह्मयज्ञ-देवयज्ञादि पांच महायज्ञों के विधानों को, श्राद्ध के सनातन विधान को भी (मनु ने इस शास्त्र में बताया है)।[22]

वृत्तीनां लक्षणं चैव स्नातकस्य व्रतानि च।
भक्ष्याभक्ष्यं च शौचं च द्रव्याणां शुद्धिमेव च॥

जीविकाओं के लक्षण को, स्नातक के व्रतो को, पञ्चम अध्याय में भक्ष्य-अभक्ष्य वस्तुओं को, शरीरशौच को, द्रव्यो की शुद्धि को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

स्त्रीधर्मयोगं तापस्यं मोक्षं सन्यासमेव च।[23]
राज्ञश् च धर्ममखिलं कार्याणां च विनिर्णयम्॥

स्त्रीधर्म को, वानप्रस्थचर्या को, मोक्षधर्म को,सन्न्यास को,राजा के सम्पूर्ण धर्म को और विवादपदों के (मुकदमों के) निर्णय को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

साक्षिप्रश्नविधानं च धर्मं स्त्रीपुंसयोरपि।[24]
विभागधर्मं द्यूतं च कण्टकानां च शोधनम्॥

[20] **मनु.स्मृ 1-111**
[21] **मनु.स्मृ 1.112**
[22] **मनु.स्मृ 1.113**
[23] **मनु.स्मृ 1.114**
[24] **मनु.स्मृ 1.115**

नवममाध्याय में साक्षियों से पूछने के विधान को, स्त्री-पुरूषसम्बन्धविषयक धर्म को,दायभागसम्बन्ध धर्म को द्युत से सम्बद्ध धर्म को और चोरादि राष्ट्रकण्टकों के निवारण से सम्बद्ध धर्म को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

वैश्यशूद्रोपचारं च सङ्कीर्णानां च सम्भवम् ।[25]
आपद्धर्म च वर्णानां प्रायश्चित्तविधिं तथा ।।

वैश्यों के और शूद्रो के धर्म को , दशमाध्याय में सङ्कीर्ण जातियों की उत्पत्ति को, एकादशाध्याय में वर्णों के आपत्काल के धर्म को और प्रायश्चित्तविधि को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्मसम्भवम् ।[26]
निःश्रेयस कर्मणां च गुणदोषपरीक्षणम् ।।

द्वादशाध्याय में कर्मानुसार संसार में प्राप्य तीन प्रकार की गति को, मोक्षदायक कर्म को, कर्मो के गुण-दोषों के परीक्षण को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

देशधर्माञ् जातिधर्मान् कुलधर्मांश् च शाश्वतान् ।[27]
पाषण्डगणधर्मांश् च शास्त्रेऽस्मिन्नुक्तवान् मनुः ।।

देशों के धर्मों को, जातियों के धर्मों को, कुल के सनातन धर्मों को, पाषण्डधर्मों को, वाणिगादिसमूहरूप गणों के धर्मों को भी मनु ने इस शास्त्र में बताया है।

मनुस्मृति को धर्मशास्त्रों का एक आधारभूत ग्रन्थ माना जाता है ,जो हिंन्दू समाज के लिए नैतिक और वैयक्तिक आचरण के नियम और सामाजिक संरचना के दिशानिर्देश करता है। जिसके द्वारा इह विराट जगत् अहर्निश उत्पत्ति ,स्थिति और विनाश के क्रम मे संचालित हैं। लोक जीवन के लिए नितान्त आवश्यक भी हैं।

उपसंहारः-

मनुस्मृति धर्म के सिद्धांतों और सामाजिक पदानुक्रम की प्रकृति के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। मनुस्मृति का अध्ययन करके, हम भारतीय संस्कृति और इतिहास की गहरी समझ प्राप्त कर सकते हैं और इन अंतर्दृष्टियों का उपयोग सभी के लिए एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज के निर्माण में सहायता कर सकते हैं। मनुस्मृति सनातन परम्परा, लोकमत तथा अनुभव का मनोहारी धर्मग्रन्थ है जिसमें समाज धर्म तथा राजधर्म को पर्याप्त पोषक तत्त्व मिला है। आज यह ग्रन्थ भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था देने में, न्यायालयों में न्याय दिलाने में अमूल्य योगदान कर रहा है। इस प्रकार मनु का व्यक्तित्व तथा कृतित्व सनातन धर्म की धुरी पर अवलम्बित है।

सहायकग्रन्थसूची

1. **मनुस्मृतिः– संपा. शिवराज आचार्यः कौण्डिन्न्यायनः, वाराणसीः चौखम्बा विद्याभवन, 2010।**
2. **तैत्तिरीय संहिता – श्रीपाददामोदरसातवलेकर, स्वाध्यायमण्डलः, पारडी, चतुर्थसंस्करणम्-1983।**
3. **श्रीमद्भगवतगीता – मुंशीराममनोहरलाल, 1978।**
4. **ताण्ड्य-महाब्राह्मणः।**

[25] **मनु.स्मृ 1.116**
[26] **मनु.स्मृ 1.117**
[27] **मनु.स्मृ 1.118**